मेंढक और दुनिया की सैर

मैक्स वी.

मेंढक और दुनिया की सैर

मैक्स वी.
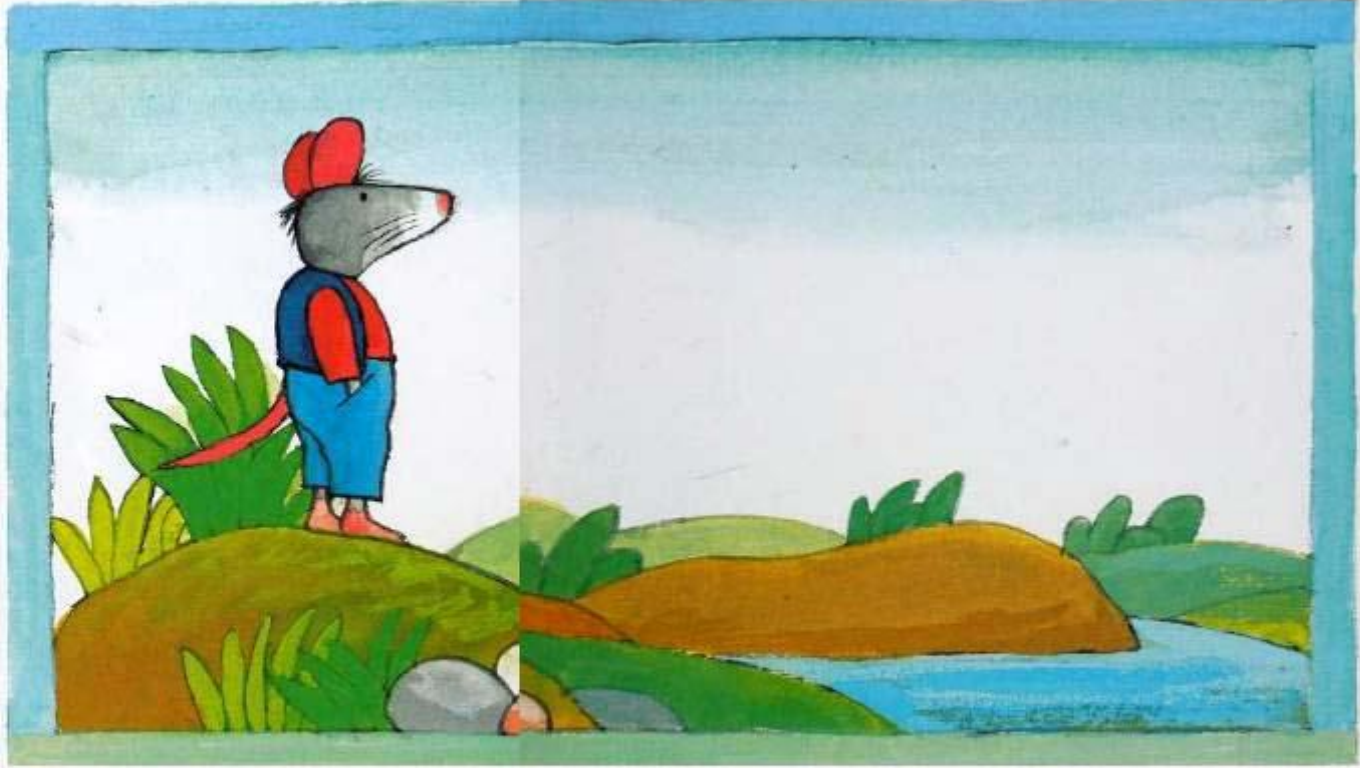
चूहा एक पहाड़ी की चोटी पर खड़ा होकर क्षितिज की ओर देखने लगा.

"दुनिया बेहद सुंदर है," उसने आह भरी. और तुरंत उसे अपने अंदर एक बेचैनी महसूस हुई.

"अब मेरे लिए अपनी यात्रा पर जाने का समय आ गया है."

अगली सुबह-सुबह, उसने अपना बैग उन ज़रूरी चीज़ों से भरा जिनकी यात्रा में उसे ज़रूरत पड़ सकती थी. उसने यात्रा में लगने वाली खाने की चीज़ें भी साथ में लीं.

फिर वो अपनी यात्रा पर निकल पड़ा. उसके दिल में रोमांच और उत्सुकता थी.

वो अभी ज्यादा दूर नहीं गया था कि उसे चिल्लाने की आवाज सुनाई दी. "मेरा इंतजार करो!"

उसने देखा कि मेंढक उसकी ओर दौड़ रहा था.

"चूहे!" मेंढक ने कहा. "तुम कहाँ जा रहे हो?"

"मैं पूरी दुनिया घूमने जा रहा हूँ," चूहे ने कहा. "मुझे ऐसे साहसिक अभियानों में बड़ा मज़ा आता है."

"क्या मैं भी तुम्हारे साथ चल सकता हूँ," मेंढक ने बड़े उत्साह से पूछा.

"बिलकुल नहीं!" चूहा चिल्लाया. "इतनी लंबी यात्रा के लिए तुम बहुत छोटे हो."

"देखो चूहे, मैं छोटा भले ही हूं लेकिन मैं ताकतवर हूं. मैं अपनी चीजें खुद उठाऊंगा. और अगर यात्रा में दो लोग होंगे तो तुम्हें भी ज्यादा मज़ा आएगा."

"ठीक है, फिर चलो," चूहे ने कहा. "लेकिन रास्ते में पीछे मत हटना!"

फिर दोनों दोस्तों ने मिलकर दुनिया की यात्रा शुरू की.

मेंढक ने सामान का बस्ता उठाया और चूहे ने रास्ता दिखाया.

"यात्रा कितनी सुन्दर है," थोड़ी देर बाद मेंढक ने कहा. "यह इलाका घर से बहुत अलग है." मेंढक पहले कभी इतनी दूर नहीं गया था.

एक मील आगे चलने के बाद मेंढक बैठ गया. "मुझे भूख लगी है," उसने कहा. "हम दोपहर का भोजन कब कर सकते हैं?"

"क्या?" चूहा चिल्लाया. "हमने अभी-अभी तो अपनी यात्रा शुरू की है!"

फिर भी, मेंढक ने अपने रकसैक में से दो मक्खन के सैंडविच निकाले. वो उन्हें खुद खाने को तैयार था. "यह केवल नाश्ता है," चूहे ने सख्ती से कहा. "हमें अभी एक लंबा रास्ता तय करना है."

सैंडविच खाने के बाद तो वे एक बार फिर चलने लगे.

"क्या हम अपनी मंज़िल के कहीं आसपास हैं?" मेंढक ने पूछा.

"क्या?" चूहे ने पूछा.

"क्या हम बड़ी दुनिया के कहीं आसपास हैं," मेंढक ने कहा.

"हम वहां कैसे हो सकते हैं?" चूहे ने अधीरता से कहा. "हमने अभी-अभी तो अपने घर छोड़ा है."

जब उन्होंने चलना बंद किया तब सूरज लगभग अस्त हो चुका था.

मेंढक जमीन पर गिर पड़ा. "मैं थक गया हूँ. मैं और आगे नहीं चल सकता हूँ," वो रोने लगा. "हम घर कब जायेंगे?"

"घर?" चूहा चकित रह गया. "घर यहाँ से बहुत दूर है! यह वो जगह है जहाँ पर हम रात बिताएंगे."

चूहे ने आरामदेह जगह चुनी और फिर वे दोनों वहां आराम करने के लिए लेट गए.

"चूहे," मेंढक ने थोड़ी देर बाद कहा, "मुझे नींद नहीं आ रही है."

"अपनी आँखें बंद करो और अपनी पसंदीदा चीजों के बारे में सोचो," चूहे ने कहा.

मेंढक ने बहुत कोशिश की लेकिन उस युक्ति ने काम नहीं किया. उसे अजीब आवाजें सुनाई दे रही थीं.

वो शायद शेर थे...या बाघ थे.

जब सुबह हुई तो मेंढक उठना ही नहीं चाहता था.

लेकिन चूहा यात्रा ज़ारी रखने के लिए पक्का था. और फिर उन दोनों ने पहाड़ियां चढ़कर और घाटियां लांघकर दुनिया की यात्रा जारी रखी.

"क्या अब हम अपनी मंज़िल के करीब हैं?" मेंढक ने हाँफते हुए पूछा.

"बिल्कुल नहीं," चूहे ने कहा. "यदि तुम इस बड़ी दुनिया में कुछ भी देखना चाहते हो तो तुम्हें दृढ बनना होगा."

अचानक आसमान में अंधेरा छा गया. सूरज बादलों के पीछे गायब हो गया और बारिश शुरू हो गई, पहले धीरे-धीरे लेकिन बाद में बहुत ज़ोर से. दोनों दोस्त बारिश से बचने के लिए दौड़े.

वे सूखे रहे लेकिन मेंढक को ठंड लगने लगी.

"मैं सोच रहा हूँ कि अब घर पर चीजें कैसी होंगी," उसने धीरे से कहा.

"मैं सोच रहा हूँ कि सुअर कैसा होगा? और बतख और खरगोश?"

"बारिश रुक गई है," चूहे ने कहा. "अब चलें!"
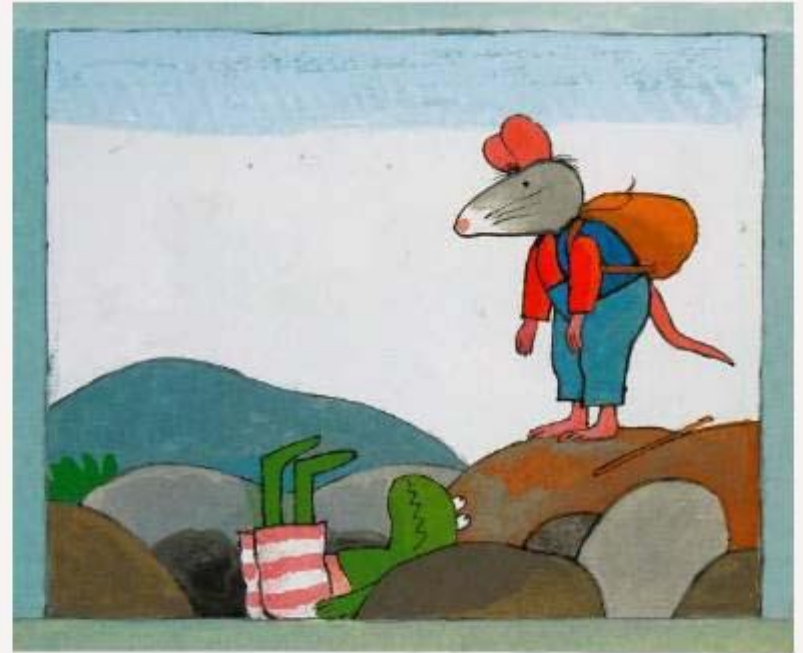
वे चलते रहे और चलते रहे और अंत में वो एक जंगली, निर्जन पहाड़ पर पहुंचे. वे चट्टानों और पत्थरों पर चढ़ गए.

"ज़रा इधर देखो! कितना शानदार नज़ारा है?" चूहे ने कहा.

लेकिन मेंढक वहां पर फिसल कर गिर गया, और वो कुछ भी नहीं देख पाया.
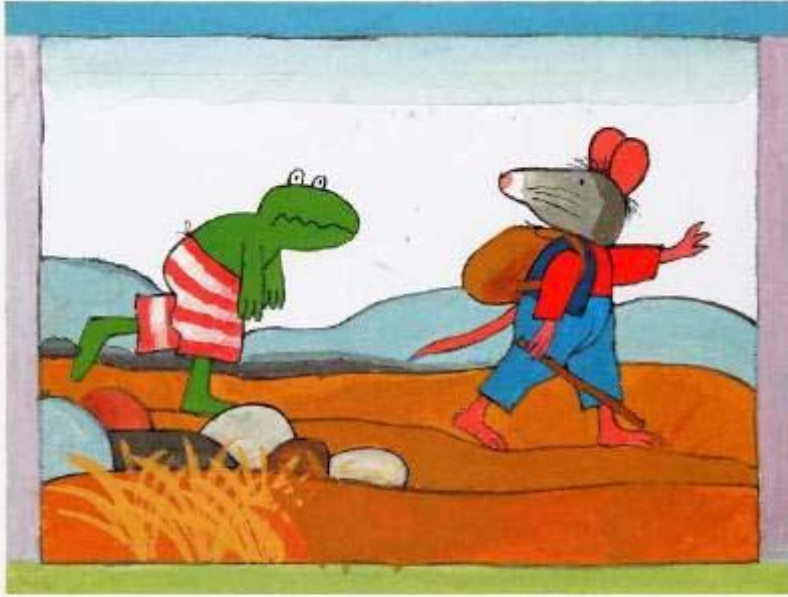
"मुझे लगता है कि मेरा पैर टूट गया है," मेंढक ने रोते हुए कहा.

"उसमें बहुत दर्द हो रहा है, इसलिए मेरे लिए चल पाना बहुत मुश्किल है."

"इस तरह हम कहीं नहीं पहुंचेंगे," चूहा बड़बड़ाया. "अब से मैं तुम्हें उठाकर चलूँगा."

फिर चूहे ने मेंढक को अपनी पीठ पर उठाया और आगे बढ़ा.

"शायद सुअर केक बना रहा होगा," मेंढक ने कहा. "मैं अचरज कर रहा हूँ कि बत्तख और खरगोश क्या कर रहे होंगे? हम लोग आपस में मिलकर हमेशा घर में बड़ा मज़ा करते थे."

"तुम अपनी बाकी ज़िंदगी घर पर बैठकर बिता सकते हो," चूहे ने कहा.

"अभी, हम विदेशी भूमि पर हैं. ज़रा अपने चारों ओर देखो! देखो, यहाँ पर कितना सुंदर नज़ारा है? और यहाँ हर जगह एकदम नई है."

अंत में वे एक घास के मैदान में पहुँचे. चूहे ने मेंढक को नीचे ज़मीन पर रखा.

"मैं थक गया हूँ." चूहे ने कहा. "हम यहीं सोएंगे."

"यहाँ?" मेंढक ने निराश होते हुए पूछा, "घर पर मेरे पास दुनिया का सबसे अच्छा, आरामदायक बिस्तर है. लेकिन मेंढक भी थका हुआ था, और जल्द ही वो भी सो गया.

लेकिन जब वे अगली सुबह उठे तो मेंढक की हालत काफी दयनीय थी.

"चूहे, मेरी तबियत ठीक नहीं है. मैं बहुत बीमार महसूस कर रहा हूँ. मैं अब और दुनिया नहीं देखना चाहता हूँ. मुझे घर की बहुत याद आ रही है!"

"तुम दुनिया भर की यात्रा के लिए बहुत छोटे हो," चूहे ने कहा. "तुम बीमार नहीं हो. बल्कि तुम्हें घर की बहुत याद सता रही हैं."

"घर की याद?" यह शब्द सुनकर मेंढक उछल पड़ा. "क्या वो बहुत बुरी बात है?"

"बहुत नहीं," चूहे ने कहा. "हाँ, घर पहुँचने के बाद तुम बेहतर महसूस करोगे."

"घर ......" मेंढक बड़बड़ाया.

"अब हमारी यात्रा ख़त्म हुई," चूहे ने कहा. अब हम घर वापस जा रहे हैं."

चूहे को अब मेंढक को ढोने की आवश्यकता नहीं पड़ी. वो तेज़ी से सुअर, बत्तख और खरगोश के पास दौड़ते हुए गया. उसे देखकर चूहा हंसने लगा.

"क्या तुम्हें घर वापिस जाना अच्छा नहीं लग रहा है?" मेंढक ने पूछा.

"नहीं, नहीं." चूहे ने कहा. "मुझे भी घर की कुछ-कुछ याद सता रही थी. मुझे भी घर जाकर अच्छा लगेगा."

अंत में घंटों चलने के बाद मेंढक ज़ोर से चिल्लाया.

"देखो! हम लगभग घर पहुँच चुके हैं!"

और फिर कुछ ही दूरी पर उन्होंने सुअर, बत्तख और खरगोश को उनकी प्रतीक्षा करते हुए देखा. मेंढक अपने दोस्तों की ओर ऐसे दौड़ा जैसे उसके पंख लगे हों.

"स्वागत है!" खरगोश ने कहा. "तुम्हारी यात्रा कैसी रही?"

"बेहद शानदार!" मेंढक ने कहा. "बाहर की दुनिया बहुत सुंदर है.

और हमारे काफी रोमांचक अनुभव भी हुए. वहां पर शेर और बाघ भी थे और.. "

"तुम तुरंत अंदर आओ." सुअर ने कहा, "और हमें अपने अनुभवों के बारे में सब कुछ बताओ."

"मैंने अभी-अभी एक केक बनाया है और तुम्हें भूख लगी होगी."

मेंढक वही शब्द सुनना चाहता था.

फिर सब लोग सुअर के स्वादिष्ट केक को खाने के लिए मेज के चारों ओर बैठे. फिर मेंढक ने भयानक तूफान का अपनी बहादुरी का वर्णन किया. वे कितने ऊंचे पहाड़ों पर चढ़े और उन्होंने वहां क्या-क्या देखा.

"लेकिन, फिर भी घर जैसी कोई और जगह नहीं है," मेंढक ने कहा, और उसने अपने अच्छे, गर्म, छोटे बिस्तर के बारे में खुशी से सोचा.

समाप्त